आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-55 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अप्रैल, 2016 | मूल्य - 2 रूपए

12 अप्रैल, इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे पर विशेष अंक

हमने जो खोया है, क्या लौटा पाएंगे आप ?

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने संगठित होकर यू. एन. सी. आर. सी. के सदस्यों के सामने रखी अपनी बात

बालकनामा रिपोर्टर

भारत के 8 विभिन्न राज्यों और नेपाल के 38 पूर्व एवं वर्तमान सड़क एवं कामकाजी बच्चों (21 लड़के और 17 लड़कियां) ने दिल्ली में संगठित होकर यू. एन. जनरल के सामने अपने विचार रखें। यह विश्व के किसी भी सड़क व कामकाजी बच्चे के लिए ऐतिहासिक क्षण था। इस कार्यशाला को लाइव कवर करने के लिए टीम बालकनामा को विशेष आमंत्रण मिला था, जबकि दूसरे मीडियाकर्मियों को इस कार्यक्रम में आना मना था। यह कार्यक्रम कंसोर्टियम फॉर स्ट्रीट चिल्ड्रन और प्लान इंडिया द्वारा आयोजित किया गया था और चाइल्डहुड एन्हांसमेंट थ्रू ट्रेनिंग एंड एक्शन (चेतना) ने सड़क व कामकाजी बच्चों के संबंध में तकनीकी सहयोग प्रदान किया।

हम आपको बताएंगे कि इस कार्यक्रम में क्या हुआ और बच्चों द्वारा कहे गए व ास्तविक कथन क्या थे..। हम सभी नीति निमार्ताओं से यह अपील करेंगे कि बच्चों द्वारा की गई इन महत्वपूर्ण टिप्पणियों पर ध्यान दें।

सड़क व कामकाजी बच्चों ने सुरक्षा का मुद्दा उठाया

बालकनामा रिपोर्टर

सड़क व कामकाजी बच्चे विश्व के सबसे कमजोर वर्ग में गिने जाते हैं, उन्हें अपने रोजमर्रा के जीवन में बहुत सारे खतरों का सामना करना पड़ता है। शहरों की भागमभाग भरे जीवन में उन्हें दो वक्त की रोटी के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है और कोई भी उनकी ओर देखने वाला भी नहीं होता है। रहने से लेकर काम करने वाली जगह तक उनका शोषण होता है। अपने अस्तित्व के लिए इन बच्चों को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

इस कार्यशाला में बच्चों ने अपनी सुरक्षा से संबंधित निम्नलिखित मुद्दे उठाए:-

हमें दूसरों के द्वारा पीटने के लिए छोड़ दिया जाता है, काम करने के लिए मजबूर किया जाता है और यौन शोषण का सामना करना पड़ता है।

छुट्टियों के दौरान बड़े घरों के बच्चे घूमने-फिरने जाते हैं और हम अपने परिवार का सहयोग करने के लिए काम पर जाते हैं।

हम नशीले पदार्थों और समूहों की हिंसा के शिकार हो जाते हैं। समाज द्वारा हमें अनदेखा किया जाने के कारण हम नशीले पदार्थों के आदी हो जाते हैं।

हम पुलिस की हिंसा के शिकार होते हैं, पुलिस हमें डंडों से पीटती है और हमारी बात नहीं सुनती है। पुलिस का यह व्यवहार हमें हठी बना देता है और हमें अपराधों की दुनिया में धकेलता है।

हमें लैंगिक हिंसा और अन्याय का सामना करना पड़ता है। बाल विवाह सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए आम बात है। हमें अनदेखा किए जाने और हमारा शोषण होने के कारण कभी कभी हमारे मन में आत्महत्या करने के विचार भी आते हैं। गैर सरकारी संगठनों की अनुपस्थिति में हमें विकलांगता, नागरिकता और पहचान को लेकर भी बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

शारीरिक दंड के चलते हम स्कूल छोड़ देते हैं और समुदाय की एकजुटता के अभाव में हमें अपराध की दुनिया में धकेल दिया जाता है।

हमें काम करना पड़ता है, क्योंकि हमें खेलने का अवसर नहीं दिया जाता है। फसल खराब होने, स्थानांतरण होने और डॉक्टरों द्वारा हमारी कोई सहायता न करना ये सब हमें समाज से अलग बनाते हैं।

Photo courtesy- Plan India Communications

जो हमने खोया है, क्या आप उसका खामियाजा भर सकते हैं ?

बढ़ते कदम ने यू.एन.सी.आर.सी के सदस्यों को जमीनी स्तर से कराया अवगत

बातूनी रिपोर्टर तंजीम, लेखक रिपोर्टर शम्भू

निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के पास झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले बच्चों सेयू.एन.सी.आर.सी के सदस्य श्रीमती यासमीन जी और श्रीमती ऐलीनार जी मिलने आए। सबसे पहले यह काले खां रैन बसेरे में सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मिलने पहुंचे और यह जाना कि बच्चे किस स्थिति में रह रहे हैं, वह कैसे रहते हैं? रैन बसेरों में वह कैसे अपना जीवन बिता रहे हैं? बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव ज्योति जो कि खुद रैन बसेरे में रहती है उसने यू.एन.सी.आर.सी के सदस्यों को बताया कि रैन बसेरे में कुछ फैमिली वाले बच्चे रहते हैं और कुछ बच्चे यहां ऐसे हैं जिनके साथ उनका परिवार ही नहीं है। इसलिए ज्यादातर बच्चे पुल के नीचे रहते हैं, पुल के नीचे सोते हैं क्योंकि बिना परिवार वाले बच्चे रैन बसेरे में नहीं रहने देते हैं। रैन बसेरे में सिर्फ वह बच्चे रह सकते हैं जिन बच्चों के परिवार हैं। फिर ज्योति ने उन बच्चों से यू.एन.सी.आर.सी के सदस्यों से मिलवाया जिन बच्चों का चेतना संस्था द्वारा स्कूल में दाखिला हुआ है। जब यू.एन.सी.आर.सी के सदस्य पायल से मिले तो 13 वर्षीय पायल ने बताया कि मैं पहले कबाड़ा बीनने का काम करती

थी, लेकिन जब से मेरा स्कूल में दाखिला हुआ है तब से मैं रोज स्कूल पढ़ने जाती हूं और इस बार मैं अपनी कक्षा में सेकेंड आई हूं। यह जानकर श्रीमती यासमीन जी और श्रीमती ऐलीनार जी बहुत खुश हुई।

ज्योति ने बताया कि यहां सभी बच्चे बाल मजदूरी करते हैं और ढाबों व अन्य जगह काम करते हैं। उसके बाद उनकी मुलाकात श्री धर्मवीर जी से हुई। बच्चों यू.एन.सी.आर.सी के सदस्यों को जी.आर.पी थाने ले गए, जहां चेतना संस्था द्वारा ओपन बेसिक एजूकेशन सेंटर चलाया जा रहा है। यहां वह सभी बच्चे पढ़ने जाते हैं जो रेलवे स्टेशन पर काम करते हुए भी अपनी पढ़ाई कर रहे हैं। बच्चों से मिलकर वह बहुत खुश हुए। उनका हौसला बढ़ाया और कहा कि इसी तरह आप पढ़ाई करते रहो। श्रीमती यासमीन जी ने जी.आर.पी. थाने के एस.एच.ओ श्री सुनील जी से बात की और पूछा कि आपको इन बच्चों के साथ काम करके कैसा लगता है, तो उन्होंने बताया कि मुझे बहुत अच्छा लगता है इन बच्चों के साथ काम करके। हमारा यही उद्देश्य रहता है कि जो बच्चे स्टेशन पर इधर उधर घूमते रहते हैं, वह शिक्षा प्राप्त करें। इसलिए इन बच्चों को यह मौका दिया गया है कि जी.आर.पी. थाने में बच्चों के लिए जो सेंटर चलाया जा रहा है, वहां आकर पढ़ाई करें। इस सेंटर की शुरूआत 14 नवम्बर को की गई थी। पहले बच्चे पुलिस से डरते थे, लकिन जब से वह यहां आकर पढ़ाई करने लगे इनको कोई परेशानी नहीं होती है। हम से यह खुलकर बातचीत करते हैं। इससे बेहद खुशी की बात हमारे लिए और क्या हो सकती है। इस कार्यक्रम को और अच्छा बनाया जाए, यह हमारी शुभकामनाएं हैं।

सड़क व कामकाजी बच्चों ने टीम इंडिया का बढ़ाया हौसला

लीड रिपोर्टर तंजिम, रिपोर्टर शंभू

टी-20 वर्ल्ड कप में भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी और विराट कोहली द्वारा खेले गए शानदार मैच का खुमार लोगों के सिर चढ़कर बोल रहा है। इनकी इस फेहरिस्त में सड़क व कामकाजी बच्चों की भी एक अच्छी खासी संख्या है, जो क्रिकेट के अत्यधिक प्रेमी हैं। इन बच्चों की इस बात को ध्यान में रखते हुए सड़क व कामकाजी बच्चों के संगठन बढ़ते कदम के द्वारा टीम इंडिया का हौसला बढ़ाने के लिए ''सड़क की गुगली'' नाम से एक टूनार्मेंट मैच आयोजित किया गया।

संगठन की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने बताया कि सड़क की गुगली टूनार्मेंट की शुरूआत 2004 में विश्व कप के समकक्ष की गई थी।

यह टूनार्मेंट 40 सड़क व कामकाजी बच्चों

के साथ खेला गया, जो रेलवे स्टेशन पर विषम परिस्थितियों में रहकर अपना जीवनयापन कर रहे हैं। इस टूनार्मेंट को खेलकर उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे उन्होंने जीवन के कुछ क्षण टीम इंडिया के लिए जिए हों। यह मैच 10-10 ओवर का खेला गया, जो बेहद रोमांच व उत्साह से भरा मैच था। मैच खेलते समय सभी खिलाड़ियों की बस यही प्रार्थना थी कि टीम इंडिया टी-20 वर्ल्ड कप जीत जाए।

10 वर्षीय कबाड़ा बीनने वाले रोहित ने कहा कि मैं विराट कोहली का बहुत बड़ा फैन हूं। रोहित ने बताया कि हम विराट कोहली की हेयर स्टाइल की नकल करते हैं, उनका उत्साह और आत्मविश्वास हमें बुरी परिस्थितियों में संयम रखने के लिए बहुत प्रेरित करता है। हम बिना किसी संसाधन के रहते हैं और फिर भी खुश रहते हैं। मैं चाहता हूं कि एक दिन मैं विराट कोहली से मिलूं। रोहित ने 3 ओवर में 10 रन देकर 3 विकेट लिए।

15 वर्षीय बोतल चुनने वाले अंकित ने कहा कि महेंद्र सिंह धोनी मेरे हीरो हैं। उसने कहा कि जब धोनी क्रीज पर होते हैं तो कोई भी भारत को हरा नहीं सकता। मैं प्रार्थना करता हूं कि भारत यह मैच जीत जाए, यदि भारत यह मैच जीत जाएगा तो मैं अपने सिर के बाल मुंडवा दूंगा। मेरी इच्छा है कि एक दिन मैं टीम इंडिया के लिए खेलूं। उसने 10 गेंदों में 34 रन बनाएं।

16 वर्षीय किताबें बेचने वाले राजू ने कहा कि हम भी टैलेंटेड हैं, लेकिन हमें कोई भी क्रिकेट खेलने के लिए आमंत्रित नहीं करता है, जबकि कोई भी यह बात नहीं जानता है कि हममें से भी एक विराट कोहली भी हो सकता है।

बढ़ते कदम की सचिव 16 वर्षीय ज्योति ने कहा कि सड़क व कामकाजी बच्चे टीम इंडिया के बहुत बड़े फैन हैं। ये बच्चे बहुत अच्छा क्रिकेट खेलते हैं। हम यह संदेश देना चाहते हैं कि सड़क व कामकाजी बच्चे भी भारत के नागरिक हैं, और वो भी देश से बहुत प्यार करते हैं। एक दिन ऐसा भी आएगा, जब उन्हें उनके अधिकार मिल जाएंगे।

चांदनी ने कहा कि इस मैच के दौरान बच्चों ने ट्रॉफी जीती और एक ग्रुप फोटो भी ली। सड़क व कामकाजी बच्चे भी गेंद की तरह होती हैं, यदि उन्हें सही दिशा व उचित मार्गदर्शन मिल जाए तो वे सही रास्ते पर चले जाते हैं और परिस्थितियों से बाहर निकल आते हैं।

विजेता टीम ने 10 ओवर में 71 रन बनाए। अंकित ने मैन ऑफ द मैच जीता।

Street Children united to feed to UN General Comment

हमने जो खोया है, क्या लौटा पाएंगे आप ?

सड़क व कामकाजी बच्चों ने पूरे विश्व के सम्मुख रखी अपनी मांगें

बालकनामा रिपोर्टर

आपने हमें अपनी कार के शीशे से देखा होगा? हमसे बात करने की कोशिश कीजिए, कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं।

पूरा विश्व हमारी बात पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देता है। क्यों पूरा विश्व हमें अनसुना कर रहा है? उन्हें हमारी बात सुननी चाहिए।

हमारी गणना हो और हमें हमारी पहचान मिले। हम एक सुरक्षित शेल्टर होम, साफ पीने का पानी और पौष्टिक भोजन की मांग करते हैं।

पुलिस को संवेदशील होना चाहिए, ताकि सड़क व कामकाजी बच्चे भयमुक्त जीवन जी सकें। हमें पुलिस की मार और शोषण से बच्चों को बचाना चाहिए और उनको एक सुरक्षित जीवन प्रदान करना चाहिए।

बच्चों के लिए अलग से और जल्द न्याय करने वाला प्रणाली तंत्र होना चाहिए, जो बच्चों को 'जीने दो' में मदद करे।

प्रत्येक सड़क व कामकाजी बच्चे को जन्म प्रमाण पत्र मिलना चाहिए और उनका 100 प्रतिशत स्कूल में प्रवेश हो, यह बात सुनिश्चित की जानी चाहिए।

बाल विवाह पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए और बाल विवाह को रोकने के लिए बनाया गया कानून का उचित पालन होना चाहिए तथा विशेष श्रेणी में आने वाले बच्चों के लिए इसमें विशेष प्रावधान होने चाहिए।

कृपया कुछ सड़क व कामकाजी बच्चों के माता-पिता को ढूंढने में उनकी मदद करें।

क्या रेलवे स्टेशनों के पास गुजर बसर करने बच्चों को पास में ही रहने के लिए एक शेल्टर होम मिल सकता है?

सड़क पर रहने वाले लड़कियों को अधिक सुरक्षा की अवश्यकता है।

सड़क व कामकाजी बच्चों को चिकित्सीय सुविधाएं भी प्रदान की जाएं।

सड़क व कामकाजी बच्चों को खेलने का भी अधिकार है, इसलिए सरकार द्वारा उन्हें ऐसा वातावरण प्रदान किया जाए, जहां वे खेल सकें।

चाइल्ड केयर सेंटर ऐसे बच्चों के लिए खोले जाएं, जो स्टेशन के पास भीख मांगते हों। हम भी मच्छरों से छुटकारा पाना चाहते हैं, इसलिए मच्छर मारने वाली दवा का छिड़काव वहां भी किया जाए, जहां हम रहते हैं।

हमें निःशुल्क सार्वजनिक शौचालयों का उपयोग करने की सुविधा दी जाए, क्योंकि इस पर हमारा बहुत पैसा खर्च होता है।

नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले बच्चों और शराब पीने वाले उनके अभिभावकों के लिए रिहैबिलिटेशन सेंटर होने चाहिए।

बच्चों की निर्भरता गैर सरकारी संगठनों पर कम हो।

सड़क व कामकाजी बच्चों के माता-पिता को पढ़ने का अवसर मिले, ताकि वे शिक्षा की महत्ता को समझ सकें।

आप हमेशा कहते हैं कि स्कूल जाओ, वहां बहुत अच्छा भोजन मिलता है, लेकिन भोजन की गुणवत्ता बहुत खराब होती है।

बालकनामा की एडिटर चांदनी ने यून.सी.आर.सी. की सदस्य श्रीमती यासमीन जी से की बात

रिपोर्टर चांदनी और शन्नो

बालकनामा की एडिटर चांदनी ने यून0सी0आर0सी की सदस्य श्रीमती यासमीन जी का साक्षात्कार लिया। चांदनी ने उनसे पूछा कि आप यू.एन.सी.आर.सी के साथ मिलकर बच्चों के लिए कैसे काम करते हो?

तो उन्होंने बताया कि मैं बच्चों के साथ काफी समय से काम कर रही हूं और जब से मैंने इन बच्चों के लिए काम करना शुरू किया है, मैंने देखा है कि सच में इन बच्चों को मदद की बहुत जरूरत है। हमें इनके अधिकारों के लिए बहुत मेहनत करनी की जरूरत है। मैं हमेशा इनके लिए सोंचती हूं कि जो भी यह बच्चे हमसे चाहते हैं, अपनी बातों को हमारे सामने रखते हैं तो हमारा पूरा कर्तव्य बनता है कि हमें इनके लिए सच्चाई से काम करना चाहिए, क्योंकि हमें इनके अधिकारों के लिए काम करना है और यह बच्चे हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमें इनकी मदद के लिए ही रखा गया है, ताकि बच्चों के अधिकार उन तक पहुंच सकें। हम इस बात का हमेशा ध्यान रखते हैं कि बच्चों को किसी भी तरह का नुकसान न पहुंचे।

चांदनी ने पूछा कि 38 बच्चों ने अंतर-र्ष्ट्रीय बैठक में आपके सामने बातचीत की और अपनी समस्याओं को आपके सामने रखा है तो आप यहां से जाने के बाद इन बच्चों के लिए क्या कदम उठाएंगी?

श्रीमती यासमीन जी ने कहा कि जब हम यहां से वापस जाएंगे तो सबसे पहले हमारी यू.एन.सी.आर.सी के सभी 18 सदस्यों के साथ एक बैठक होगी, जिसमें बच्चों के द्वारा कही गई बातों से मैं उन्हें अवगत कराऊंगी और जब उन तक आपकी बात पहुंच जाएगी तो वह सभी बच्चों की समस्याओं को यू.एन.सी.आर.सी के सामने जरूर रखेंगे। फिर यू.एन.सी.आर.सी बच्चों के लिए कुछ ना कुछ संज्ञान जरूर लेगी। बच्चों की समस्याओं को दूर करने के लिए अच्छे से काम किया जाएगा। यू.एन.सी.आर.सी बच्चों के अधिकारों का बहुत सम्मान करती है और उनके लिए वह हमेशा अच्छे कदम उठाती है। यदि बच्चों को कुछ समस्या है तो वह खुद भी यू.एन.सी.आर.सी को खत लिखकर भेज सकते हैं।

क्यों आयोजित की गई यह कार्यशाला

यहां निम्नलिखित विषय हैं, जिनको यूएन कमेटी के सदस्यों ने माना:-

बच्चों को सहयोग का अधिकार: (अनुच्छेद 15)

विशेष देखभाल एवं संरक्षण का अधिकार: परिवार के बिना सहयोग के जीवन व्यतीत कर रहे बच्चों पर विशेष ध्यान

भोजन, कपड़े के साथ साथ रहने के लिए सुरक्षित स्थान, चाहे वह समुदाय हो के प्रावधान का अधिकार

सरकार यह सुनिश्चित करे कि सड़क व कामकाजी बच्चों के अधिकारों का सम्मान किया जाए और सड़कों पर बच्चों का रहना व काम करना बंद किया जाए: जिसमें यह शामिल किया जाए कि आप सड़क व कामकाजी बच्चों के बारे में क्या सोचते हैं और समिति द्वारा सरकार को यह बताया जाए कि वह सुनिश्चित करे कि सड़क व कामकाजी बच्चों के अधिकारों का सम्मान हो।

बालकनामा रिपोर्टर

बच्चों के अधिकारों से संबंधित यूनाईटेड नेशन के अंतर्राष्ट्रीय दस्तावेजों में 'स्ट्रीट चिल्ड्रन' नाम का कोई शब्द नहीं है। इस कारण से अधिकारियों द्वारा इनकी ओर कोई विशेष ध्यान भी नहीं दिया जाता है। इसलिए यह कार्यशाला कंसोर्टियम फॉर स्ट्रीट चिल्ड्रन और प्लान इंडिया द्वारा आयोजित की गई थी और चाइल्डहुड एन्ह-ांसमेंट थ्रू ट्रेनिंग एंड एक्शन (चेतना) और सीडब्ल्यूसी ने सड़क व कामकाजी बच्चों के संबंध में तकनीकी सहयोग प्रदान किया और यूएनसीआरसी के सदस्यों के सम्मुख सड़क व कामकाजी बच्चों की परिस्थितियों व मुद्दों को रखा।

प्रक्रिया

बालकनामा रिपोर्टर

यह कार्यशाला तीन दिनों तक चली और यह क-ार्यशाला एक व्यवस्थित तरीके से आयोजित की गई थी, जिसमें निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया.....

बाल केंद्रितः पूरी कार्यशाला बाल केंद्रित थी और उनके अधिकारों व मुद्दों पर आधारित थी। बच्चों अपने जीवन से जुड़े मुद्दों पर खुलकर बात की।

समावेश और लड़के-लड़कियों का संतुलित अनुपातः इस कार्यशाला में 8 विभिन्न राज्यों और नेपाल के 38 पूर्व एवं वर्तमान सड़क एवं कामकाजी बच्चों (21 लड़के और 17 लड़कियां) ने अपने विचार रखें। यह समावेशी और लड़के-लड़कियों के संतुलित अनुपात की कार्यशाला थी, जहां पर लड़के-लड़कियों दोनों ने भाग लिया और सड़क व कामकाजी बच्चों के मुद्दों पर चर्चा की।

कम से कम वयस्कों का योगदानः इस कार्यशाला में बच्चों ने पूरी क्षमता के साथ भाग लिया और कार्यशाला की गतिविधियों में कम से कम वयस्कों का योगदान रहा। बच्चों ने सदस्यों के सामने कलात्मक तरीकों जैसे- अभिनय, बैलून एक्सरसाइज, गैलरी वॉक, पिक्चर, पपेट इत्यादि के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यशाला में स्थानीय भाषा में अनुवाद करने वाले एक साथ 8 ट्रांसलेटर (अनुवादक) थे।

माता-पिता के लगाए झूठे आरोप के चलते बच्चे ने की खुदकुशी

बातूनी रिपोर्टर कन्हैया, रिपोर्टर ज्योति

यह एक ऐसी दिल दहला देने वाली घटना है, जिसमें अपने ही माता-पिता द्वारा बच्चे पर लगाए गए झूठे चोरी की आरोप के चलते उसने खुदकुशी कर ली। उसके घर में चोरी तो किसी और ने की थी, लेकिन उनके मम्मी पापा ने अपने ही 14 साल के नाबालिग बच्चे पर इसका इल्जाम डाल दिया कि तुम ने ही घर से सोना चोरी किया है। उस बच्चे ने अपने मम्मी पापा को बताया भी कि मैंने चोरी नहीं की है, फिर भी उसकी बात किसी ने नहीं सुनी। और बहुत बुरे तरीके से उसकी पीटाई की।

यह बात उस बच्चे को बार बार परेशान कर रही थी, इसलिए वह दूसरे दिन गुस्से में आकर रेलगाड़ी की पटरी पर लेट गया और तेज रफ्तार से आने वाली रेलगाड़ी से उसका हांथ पांव कट गया। इस घटना के तुरंत बाद ही उसको सरकारी अस्पताल में एडमिट कराया गया, लेकिन तीन दिन बाद अस्पताल में ही उसकी मौत हो गई। इस बारे में बच्चों ने बालकनामा के पत्रकार से कहा कि ऐसे ही न जाने कितने सारे बच्चों को इस तरह की मुसीबताके का सामना करना पडता है। हम बच्चों को इसकी बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ती है। जब कि इस तरह के काम बच्चे नहीं करते हैं, लेकिन फिर भी हमारे मम्मी पापा हम पर ही शक करते हैं। हम बच्चों पर इसी तरह का झूठा इल्जाम लगाते हैं, जिससे हमें बहुत पीड़ा होती है। बालकनामा के रिपोर्टर ने इस बात पर और बच्चों से बातचीत की तो सभी बच्चों ने अलग अलग प्रकार की इसी तरह की समस्याएं बताईं और कहा कि हमारे मम्मी पापा को अच्छे से समझाना पडेगा कि यह काम हम बच्चे नहीं करते हैं, तभी इसका हल निकलेगा।

अंकुर की हिम्मत को सलाम

बातूनी रिपोर्टर अंकुर, रिपोर्टर ज्योति

जवाहर कैम्प में बहुत सारी झुग्गी झोपड़ियां हैं। वहां पर रेलवे लाईन भी है और छोटे छोटे बच्चे अकसर वहां खेलते रहते हैं। एक दिन की बात है कि एक चार साल का बच्चा खेलते खेलते रेल की पटरी के किनारे आ गया और तभी अचानक से तेज रफ्तार से रेलगाडी आ रहा थी। जसै ही 15 वर्षीय अंकुर ने देखा कि एक चार साल का बच्चा पटरी के किनारे खेल रहा है और गाडी भी तेज रफ्तार में आ रही है तो अंकुर दौड़कर गया और उस बच्चे को वहां से हटाया।

जिस बच्चे की अंकुर ने जान बचाई थी, उसकी मम्मी रोते रोते अंकुर के पास आई और उसका धन्यवाद दिया। वह अंकुर से बोली कि अगर तुम आज मेरे बेटे को नहीं बचाते तो न जाने मेरे बेटे के साथ क्या हो जाता। तुमने अपनी जान को खतरे मे डालकर मेरे बेटे की जान बचाई है। इस तरह वहां उपस्थित सभी लोगों ने अंकुर को गले से लगा लिया और सब अंकुर की हिम्मत की सराहना करने लगे, सब कहने लगे कि यह हमारा हीरो है।

अंकूर बढ़ते कदम का सदस्य भी है और वह पढ़ने में भी बहुत तेज है। जब बालकनामा की पत्रकार ज्योति ने अंकूर से पूछा कि तुम्हें उस बच्चे की मदद करके कैसा लगा? तो अंकुर ने बताया कि मुझे बच्चों की मदद करना बहुत अच्छा लगता है और मैं बड़े होकर भी बच्चों के लिए ही काम करूंगा। मेरा सपना यही है कि मैं बच्चों के लिए एक स्कूल खोलूं।

न मां का आंचल है न बाप का साथ

पिता के रहते भी बच्चों को है सहारे की जरूरत

रिपोर्टर चांदनी

अभिषेक 15 साल का है। इसके दो छोटे भाई बहन हैं। इसकी बहन 10 वर्ष की है और भाई 8 वर्ष का है। यह तीनों भाई बहन एक डिस्पेंसरी में रहते हैं। अभिषेक की मां नहीं हैं, पापा हैं। लेकिन वह बहुत शराब पीते हैं और उनसे दूर रहते हैं। ज्यादातर वह बाहर ही रहते हैं। वह अपने बच्चों की देखरेख नहीं करते हैं। अभिषेक की बहन की तबियत बहुत खराब है। उसने बताया कि उसकी बहन को दो तीन बीमारियों ने जकड़ रखा है और पीलियां है। पेट में दर्द होता है। जिस डिस्पेंसरी में अभिषेक रहता था, उसे वहां से निकाल दिया गया, क्योंकि वह डिस्पेंसरी अब नई बन रही है।

अभिषेक यह देखकर कहीं दूसरी जगह काम पर लग गया, क्योंकि उसे अपनी बहन का इलाज कराना था। जब वह काम पर गया तो उसे पुलिस वाले पकड़कर ले गए, क्योंकि अभिषेक कम उम्र का है। इस वजह से उसे एक होम में ले जाकर बंद कर दिया। फिर कुछ दिनों

तक वह होम बंद रहा, उसके बाद कुछ लोग उसे वहां से छुड़ाकर वापस घर ले आए। जब वह वापस घर आया तो वह इस बात से बहुत परेशान है कि वह क्या करे। उसके पापा को अपने बच्चों की कोई परवाह नहीं है। अभिषेक ने अपने भाई बहन के बारे में जब बालकनामा की रिपोर्टर चांदनी को बताया तो चांदनी ने कहा कि आप अपने बहन भाई को होम में डाल दो। यह सुनकर अभिषेक ने कहा कि नहीं दीदी मैं अपने भाई बहन को होम में नहीं भेजूंगा, क्योंकि पुलिस वाले पहले मुझे वहां लेकर गए थे। वो जगह बच्चों के लिए अच्छी नहीं है। वहां पर हम बच्चों के लिए जंगल सा है। वहां मैं अपने भाई बहन को नहीं भेज सकता। क्योंकि हम वहां नहीं रह सकते हैं।

फिर चांदनी ने कहा कि सब होम एक जैसे नहीं हैं। सब होम अलग अलग तरह के होते हैं। यह बात सुनने के बाद अभिषेक अपने भाई बहन को होम भेजने के लिए तैयार हो गया और कहा कि ठीक है। मैं अपने भाई बहन को होम में भेज दूंगा उसके बाद इस बारे में चांदनी ने वहां के आस पड़ोस के रहने वाले लोगों से बातचीत की तो वहां के लोगों ने कहा कि यह बच्चे पूरे दिन यहां से वहां घूमते रहते हैं और इन बच्चों को खाना खाने की बिल्कुल फिक्र नहीं होती। इनकी देखरेख करने वाला कोई नहीं है और न ही इन बच्चों की कोई मदद करता है। लोगों का कहना है कि हमारे पास इतना समय नहीं है कि हम इन बच्चों की मदद कर सकें और वैसे भी हमारे बच्चों के खाने पीने के लिए नहीं है तो हम इन बच्चों का क्या ध्यान रखेंगे।

मोती और फैजान का अनोखा रिश्ता

रिपोर्टर शम्भू

यह कहानी 14 वर्षीय फैजान की है। फैजान के माता पिता उसके साथ बहुत मार पीट करते थे। इस वजह से फैजान तीन साल पहले अपने घर से भागकर दिल्ली आ गया था। यहां आकर वह कबाड़ा बीनने का काम करने लगा। एक रोज जब फैजान स्टेशन पर बोतल बीन रहा था तो उसने देखा कि एक छोटा सा कुत्ते का बच्चा ट्रेन की पटरी पर खेल रहा था और उस टेज्न की पटरी पर सामने से टेज्न आ रही थी। फैजान ने टेज्ने की पटरी पर से उस कुत्ते के बच्चे को उठा लिया और उसकी जान बचा ली। उस दिन के बाद से उस कुत्ते के बच्चे के साथ फैजान ने अपना परिवार बना लिया।

फैजान उस कुत्ते के बच्चे को मोती कहकर पुकारता है। जैसे हम सभी अपने परिवार के साथ रहते हैं, उठते बैठते हैं, खाते पीते हैं और अपने परिवार का ख्याल रखते हैं, वैसे फैजान के पास ऐसा परिवार नहीं है। इसलिए फैजान ने मोती को ही अपना परिवार बना लिया। मोती और फैजान का रिश्ता एक परिवार की तरह बन चुका है। वह एक दूसरे की बातों को समझते हैं। मोती फैजान का बहुत ख्याल रखता है। उन दोनों का रिश्ता इतना मजबूत हो गया है कि जब फैजान कहीं चला जाता है तो मोती के रहते फैजान का

उठाया कबाड़ा कोई छू भी नहीं सकता। फैजान जहां जाता है, मोती भी उसके साथ जाता है। जब फैजान को भूख लगती है तो वह खुद जो खाना खाता है वह मोती को भी खिलाता है। यह दोनों एक साथ खाते हैं, उठते बैठते हैं और हमेशा साथ में ही रहते हैं। फैजान के साथ साथ मोती भी बड़ा हो गया है। इनकी दोस्ती देखकर तो यही लगता है कि बेजुबान भी प्यार की जबान समझते हैं। फैजान और मोती का यह छोटा सा परिवार अच्छी दोस्ती की मिसाल है।

आखिर कहां गई रोशनी?

डेढ़ साल से लापता रोशनी की मां बाप ने भी नहीं ली सुध

रिपोर्टर चांदनी

यह मामला लगभग डेढ़ साल पहले का है। नोएडा के सेक्टर 104 में रहने वाली 15 साल की रोशनी एक बंगाली औरत के साथ कोठियों में काम करने के बहाने ले जाई गई थी। रोशनी ने जिस दिन अपने कदम घर से बाहर निकाले उस दिन से आज तक उसने अपने घर में कदम नहीं रखे। रोशनी कहां गई ? कहां है? किस हालत में है? क्या कर रही है? इन सभी बातों से उसके माता पिता अंजान और बेफिक्र हैं। अपनी बेटी की ओर मां बाप की ऐसी लापरवाही बहुत कम देखने को मिलती है कि कैसे उसके माता पिता ने एक अंजान औरत के साथ सिर्फ पैसों की खातिर अपनी मासूम बेटी को कोठियों में काम करने के लिए जाने दिया।

जब हमारी बातूनी रिपोर्टर ने इस बात की खोज बीन की तो पता चला कि रोशनी के माता पिता ने एक बंगाली औरत की बातों के बेहकावे में आकर अपनी बेटी को उसके साथ कोठियों में काम करने के लिए जाने दिया था। उस औरत ने रोशनी के माता पिता को यह विश्वास दिलाया था कि रोशनी मेरी बेटी जैसी है और मैं इसका पूरा ख्याल रखूंगी। हर हफ्ते आप से मिलवाने लेकर आती रहुंगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ हफ्ते दर हफ्ते गुजरते गए महीनो से लेकर साल में बदल गए। लेकिन रोशनी अपने घर लौटकर नहीं आ पाई। इतनी बड़ी बात होने के बाद भी उसके माता पिता ने पुलिस में एफ.आई.आर तक दर्ज नहीं करवाई और अंधविशवास के चक्कर में पड़े रहे।

बातूनी रिपोर्टर ने बताया कि उनकी बस्ती में एक लड़की के ऊपर देवी आती हैं। उनसे जो पूछो उसका सही जवाब देती हैं। जब रोशनी के माता पिता ने अपनी बेटी की गुमशूदगी के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि रोशनी एक घर में खाना बना रही है और जोर जोर से रो रही है। उसके माता पिता को यह भी पता चला कि रोशनी की शादी किसी लड़के के साथ करा दी गई है। जैसे ही उन्हें रोशनी की शादी के बारे में पता चला तो उन्होंने उसकी तलाश बंद कर दी, ताकि बिरादरी में उनकी नांक न कटे।

शोषण से बचने के लिए ढाना नहीं करेंगे कोठियों में काम

बातूनी रिपोर्टर सक्को एवं रिपोर्टर शम्भू

सड़कों, फुटपाथों व झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले बच्चे कबाड़ा बीनने एवं कोठियों में काम करने और बोतल बेचने का काम करते है, क्योंकि काम करना इनकी मजबूरी है, लेकिन भाट कैंप में काम करने वाली लड़कियों के साथ कुछ ऐसा घटित हुआ कि उन्होंने कोठियों में काम करने से मना कर दिया। इसके पीछे उनकी बहुत बड़ी मजबूरी थी। वो कोठियों में काम नहीं करना चाहती थी और इसके पीछे की सच्चाई उन्होंने बालकनामा के रिपोर्टर शम्भू को बताई। जब शंभू ने कबाड़ा बीनने वाली लड़कियों से बात की और उस वजह का पता लगाया कि आखिर किस कारण से ये लड़कियां कोठियों में काम करने की बजाए कबाड़ा बीनने जाती हैं तो उन्होंने बताया कि कबाड़ा बीनना हमारी मजबूरी है। हम पहले कोठियों में काम दिलाने के बहाने ऐसे लोगों के बहकावे में आ चुके थे, जो काम दिलाने के बहाने हमसे कुछ और ही उम्मीद कर रहे थे।

15 साल की सक्को (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हमें भले ही दो रुपए भी न मिलें, लेकिन हम कबाड़ा ही बीनेंगे और कोई काम नहीं करेंगे क्योंकि इस काम में हम अपने आपको सुरक्षित महसूस करते है। शन्नो (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भईया कुछ महीने पहले एक लड़के ने दो तीन लड़कियों को कोठियों में काम पर लगवाया था, लेकिन उन लड़कियों को कोठियों में काम करने की वजह से बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। जिस लड़के ने उन लड़कियों को काम पर लगवाया था, उन्होंने उनके साथ जबरदस्ती की। इस कारण हम सभी लड़कियां बहुत डर गई हैं और हमारे माता पिता भी हमें घरों में करने नहीं भेजते हैं।

अकेले जीवन जीने को मजबूर बाल विवाह की शिकार लड़कियां

रिपोर्टर ज्योति

इक्कीसवीं सदी में होते हुए भी बाल विवाह जैसी घटनाएं वास्तव में माता पिता की पुरानी रीति रिवाजों की मानसिकता का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जिसके चलते वे अपने बच्चों की जिंदगी बरबाद कर रहे हैं। अभी हाल ही में सराय काले खां रैन बसेरे में रहने वाले एक परिवार ने अपनी बेटी जो महज 14 साल की है, का रिश्ता उसी की उम्र के लड़के के साथ तय कर दिया और उन दोनों की शादी करवाने का फैसला ले लिया। दोनों परिवार वालों ने धूमधाम से शादी की खुशियां मनाई और किसी को भनक तक नहीं लगने दी।

बालकनामा की रिपोर्टर ज्योति ने बाल विवाह से संबंधित इससे भी चैंकाने वाली एक खबर बताई। ज्योति की मुलाकात लाजपत नगर सेंट्रल मार्केट में काम करने वाली उन पांच 5 लड़कियों से हुई, जो बाल विवाह का शिकार थी और जिन्होंने बड़े होकर अपनी मर्जी से दूसरी शादी भी कर ली है। ज्योति ने जब उन लड़कियों से दूसरी शादी करने की वजह पूछी तो उन्होंने बताया कि हमारे माता पिता ने हमारी शादी बचपन में ही कर दी थी। जिस लड़के के साथ उन्होंने हमारी शादी की थी, वह हमे पसंद नहीं करते थे और नशा करते था। हमारे साथ बुरा व्यवहार करते थे। इस वजह से हमें वह लड़का और वह शादी भी पसंद नहीं थी। इसलिए हमने खुद के पसंद के लड़के से दूसरी शादी कर ली।

उन लड़कियों ने बताया कि ऐसी कितनी ही लड़कियां है, जिन्होंने ने दो शादियां की हैं। माता-पिता ने अपनी लड़कियों की बचपन में ही शादी कर-वाकर उनकी जिंदगी बरबाद कर दी है। अब वो न पहली शादी से खुश हैं और न दूसरी शादी से। क्योंकि उन लड़कियों ने जिन लड़कों से दूसरी शादी की है वह भी उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार करते हैं, नशा करते हैं और उनके साथ मारपीट करते हैं। इसके साथ ही वह अब अपने परिवार से दूर हैं। कुछ के परिवारवाले तो दूसरी शादी करने की वजह से अपनी बेटियों से नाता भी तोड़ चुके हैं। ऐसे में यह लड़किया अपनी दोनों शादियों से दुखी होकर अकेले जीवन बिताने को मजबूर हैं।

गुमशुदा को पहुंचाया सेंटर होम

रिपोर्टर अरशद और ज्योति

बालकनामा अखबार के बातूनी रिपोर्टर अरशद ने 14 साल के किशन को सुरक्षित लाजपत नगर के सेंटर होम पहुंचाया, जहां वह बच्चा अच्छे से पढ़ाई कर रहा है। किशन के माता पिता उसे बहुत मारते पीटते थे। इस कारण वह अपने घर से भागकर लाजपत नगर मार्केट पहुंच गया और जोर से जोर रोने लगा। अरशद ने उससे जाकर पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो तो किशन ने बताया कि मैं अपने घर से भागकर आया हूं। फिर अरशद किशन को वहां एक संस्था द्वारा चलाए जा रहे सेंटर लेकर गया। किशन ने अरशद को धन्यवाद दिया और कहा कि अगर तुम न होते तो मैं आज मार्केट में ही रो रहा होता।

पांचवी मंजिल से ग्राउंड फ्लोर तक नाजुक कंधों पर कूड़ा ढोकर लाते बच्चे

रिपोर्टर शम्भू

13 साल की उम्र के छोटे छोटे बच्चे बड़ी बड़ी कोठियों में कूड़ा कबाड़ा उठाने का काम कर रहे हैं। यह बच्चे 4 से 5 मंजिल ऊपर चढ़ कर घरों का कूड़ा उठाने का काम करते हैं। यह बच्चे कूड़े से भरा थैला अपने नाजुक कंधों पर उठाकर चैथी, पांचवी मंजिल से लेकर नीचे आते हैं। जब बालकनामा के पत्रकार उन बाल साथियों से जाकर मिले तो उन्होंने बताया कि हम सुबह 6 बजे से लेकर 10 बजे तक लगभग 20 घरो में जाकर कूड़ा उठाते हैं। हमारे कूड़े के थैले सिर्फ घरों के ही कूड़े से भरे रहते हैं। जब हम बच्चे

इतनी ऊंचाई से कूड़ा उठाकर नीचे लेकर जाते हैं तो हम बच्चों से कभी कभी कूड़ा उनकी सीढ़ियों पर फैल जाता है। तो वह हमसे कूड़ा उठवाने के आलावा सीढ़ियां भी साफ करवाते हैं।

बच्चों ने बताया कि कूड़े से बदबू आने के कारण हमसे खुलकर सांस भी नहीं ली जाती है। इस वजह से सांस लेने में बहुत कठिनाई होती है। उन्होंने पत्रकार को बताया कि हम बच्चों की एक टीम बनी हुई है और एक टीम चार-चार बच्चे होते हैं और उन चार बच्चों को जिस इलाके का एरिया दिया जाएगा वह वहीं का कूड़ा उठाएंगे। यह लोग बंगाल के रहने वाले हैं। बंगाल की जाति के लोग ज्यादातर यही कार्य करते हैं। बालकनामा के पत्रकार ने इस बात खोजबीन की कि कितने बच्चे इस तरह का काम कर रहे हैं तो वहां देखा कि 15 से 20 बच्चों का एक बहुत बड़ा ग्रुप बना हुआ है। यह ज्यादातर छोटे छोट बच्चे ही हैं जो इसमें शामिल हैं। जब पत्रकार ने उनसे कहा कि तुम्हें इस काम में इनती परेशानी होती है तो तुम यह काम क्यों करते हो। बच्चों ने बताया कि हम बहुत गरीब हैं, अगर हम यह काम नहीं करेंगे तो खाना क्या खाएगा।

पत्रकार ने पूछा आप यह कूड़ा उठाकर क्या करते हो तो उन्होंने बताया कि सभी घरों से कूड़ा उठाकर एक ठेले में जमा करते हैं। फिर एम.सी.डी कूड़ेदान के पास जमा करते हैं। उसके बाद हमारे मम्मी पापा इस कूड़े की छटाई करते हैं और छटाई किया हुआ माल मार्केट में कबाड़े की दुकान में बेच देते हैं, जिससे हमारी थोड़ी सी अलग से कमाई हो जाती है। क्योंकि भइया कूड़ा उठाने के ज्यादा पैसे कहां कोई देता है। जैसे कि ग्रांउड फ्लोर का 100 सौ रूपए, दूसरे फ्लोर का 150 रूपए और 4 से 5 मंजिल के 200 से 250 तक का रूपया ही प्रतिमाह देते हैं और अगर एक दिन भी छुट्टी कर लेते हैं तो हमें गाली गलौज भी सुनने को मिलती है। इसके साथ साथ अगले दिन ढेर सारा कूड़ा उठाना पड़ता है। इसलिए हम एक दिन की भी छुट्टी नहीं लेते हैं। क्योंकि छुट्टी लेने का कोई फायदा नहीं होता। इसलिए हम अलग इसी तरह कूड़ा छांटने का काम करते हैं, जिससे थोड़ा बहुत पैसा मिल जाता है।

दो दोस्तो की कहानी

रिपोर्टर ज्योति

हम बात कर रहे हैं 15 वर्षीय संदीप और 13 वर्षीय अरशद की। यह दोनों आपस में बहुत अच्छे दोस्त हैं। यह दोनों गढ़ी गांव में रहते हैं और लाजपत नगर मार्केट में कबाड़ा बीनने का काम करते हैं। यह रोज सुबह एक साथ कबाड़ा बीनने के लिए निकलते हैं। हम जानते हैं कि जो कबाड़ा बीनने का काम करते हैं उनके हाथ में एक बड़ा थैला होता है और कपड़े भी बहुत मैले होते हैं, जिसे देखकर अकसर कुत्ते भी भौंकने लगते हैं।

इन दोनों बच्चों के साथ भी कुछ ऐसी ही घटना हुई। एक रोज यह दोनों दोस्त कबाड़ा बीनने के लिए निकले और अचानक से इन दोनों बच्चों पर एक कुत्ते ने भौंकना शुरू कर दिया। संदीप और अरशद दोनों बहुत डर गए और वहां से भागने लगे। संदीप किसी तरह वहां से अपने आप को बचाकर निकल गया, लेकिन कुत्ते ने अरशद को अपनी गिरफ्त में ले लिया और उसके पैर में बुरी तरह काट लिया। यह देख संदीप डरता डरता हिम्मत जुटाकर अरशद के पास गया और देखा कि कुत्ते ने अरशद को बुरी तरह जख्मी कर दिया था।

संदीप जल्दी से अरशद को एक रिक्शे में बैठाकर बस स्टैंड तक लेकर गया। उसके बाद वह सफदरजंग हॉ-स्पिटल लेकर गया। वहां जाकर डॉक्टर को इस घटना के बारे में बताया। डॉक्टर ने अरशद के इंजेक्शन लगाया, जिससे कि अरशद के शरीर में कुत्ते के काटने से रेबीज न फैले और वह खतरे से बाहर हो जाए। समय पर संदीप ने अरशद को हॉस्पिटल पहुंचाया जिसके कारण अब अरशद ठीक हैं।

बढ़ते कदम-सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संगठन

रिपोर्टर विजय कुमार

आप सभी को यह बताकर खुशी हो रही है कि 12 अप्रैल, 2016 को इंटर-नेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे मनाया जाता है और हर वर्ष यह दिवस पूरे विश्व में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। हम सभी बच्चों का यह मानना है कि यह दिन हर एक सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ मनाया जाना चाहिए, क्योंकि यह दिवस खास उन बच्चों के लिए होता है, जो सड़कों, फुटपाथों और झुग्गी झोपड़ियों में रहकर अपना जीवनयापन करते हैं। जब से इन बच्चों को 12 अप्रैल इंटरनेशन स्ट्रीट चिल्ड्रन डे के बारे में पता चला है तब से ये इस अवसर पर बहुत खुश होते हैं, क्योंकि यह अलग अलग माध्यम से अपनी बातों को दशार्ते हैं ताकि उनके लिए और बेहतर काम किया जा सके।

विश्व स्तर पर हम सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों के अधिकार और उनकी सुरक्षा के मुद्दे पर कोई न कोई काम करते हैं और इन कामों के कारण ही हम समाचार पत्रों व टी.वी. के माध्मय से इन बच्चों के जीवन से जुड़ी हकीकतों के बारे जान पाते हैं। हमको पता चलता है कि ये बच्चे किन परिस्थितियों में अपनी गुजर बसर कर रहे हैं। इसलिए हम सभी को इन बच्चों के अधिकारों के लिए और इनके सपनों को उज्जवल बनाने के लिए आगे आकर इनकी मदद करने चाहिए। आपको बताते हुए बहुत दुख हो रहा है कि एक तरफ हमारे समाज के लोग इन बच्चों के लिए इतनी सहानुभूति के साथ काम कर रहे हैं और इनकी हर तरह से मदद भी कर रहे हैं, लेकिन दूसरी तरफ आज भी बहुत से लोग सड़क एवं कामकाजी बच्चों को दृष्टिहीन नजरों से देखते हैं, घृणा करते हैं, भेदभाव करते हैं तथा मारपीट भी करते हैं।

9 जुलाई 2002 में 35 सड़क एवं कामकाजी बच्चों द्वारा बनाया गया सड़क और कामकाजी बच्चों का संगठन बढ़ते कदम है, जो बच्चों द्वारा बनाया गया, बच्चों का संगठन है और इस संगठन के प्रत्येक सदस्य ने ठान लिया है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों के जीवन को बदलना है और उनके अधिकार दिलाने के लिए उन्हें सशक्त करना है। संगठन के

'हम बच्चे हैं समाज के फूल, हमें न समझो मिट्टी की धूल
हम भी पढ़ेंगे, हम भी लिखेंगे, हमें भी आगे बढ़ने दो, हमें भी आगे बढ़ने दो, बढ़ने दो

माध्यम से उनकी आवाज विश्व स्तर पर पंहुचाना है। इस संगठन द्वारा इन बच्चों ने एक के बाद लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज किया है। बच्चों ने यह साबित कर दिखाया है कि कोई भी काम मुश्किल नहीं होता और हर मंजिल पाना आसान होता है, बस हमें इन बच्चों को इनके अधिकार के बारे में सिर्फ मार्गदर्शन देने की जरूरत है। यह बच्चे तो सड़कों पर भी रहकर अपने जीवन में बदलाव ला रहे हैं, लेकिन हमें भी बदलना होगा और अपने अंदर थोड़ा बदलाव लाना होगा। सड़क और कामकाजी बच्चों के साथ एक अच्छा रिश्ता बनाकर उन्हें उस जिंदगी से दूर करना होगा, जिससे उनका भविष्य नष्ट होने से बचाया जा सके। फिर वह दिन दूर नहीं, जब इन बच्चों को इनके अधिकार मिल चुके होंगे।

मुझे भी मिले दोबारा अपनी जिंदगी सुधारने का मौका

रिपोर्टर चांदनी

मेरा परिवर्तित नाम आशा है। मैं 15 वर्ष की हूं। मेरा घर पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन के पास है। जब मैं 9 वर्ष की थी, मुझे मेरे परिवार के एक सदस्य ने नशा करना सिखा दिया था। जब मेरे पिता को इस बात का पता चला तो मुझे उन्होंने बहुत मारा पीटा, इसी कारण से मैंने अपना घर छोड़ दिया। मैं घर से भागकर स्टेशन पर आ गई, क्योंकि वह मुझे घर में नशा नहीं करने देते थे और स्टेशन पर आकर मुझे नशा करने की पूरी आजादी मिल गई। तब से लेकर आज तक मैं नशे से बाहर नहीं आ पाई और मैं नशीले पदार्थों की बुरी तरह आदी हो गई। इस वजह से मेरे माता-पिता ने मुझे धीरे धीरे अपने से दूर कर दिया।

जब भी मेरे माता पिता मुझे घर ले जाते थे तो वहां मुझे नशा तो मिलता नहीं था तो मैं अपने माता पिता को गंदी गंदी गालियां देती थी, उनसे झगड़ा करती थी। मेरी इस आदत की वजह से मेरे माता पिता ने मुझे घर बुलाने की आस ही छोड़ दी। इस तरह मैं स्टेशन की जिंदगी से जुड़ गई। जहां मैं रहती हूं, वहां कम से

कम 100 आदमी और 20 बच्चे रहते हैं, जिसमें हम सिर्फ दो लड़कियां ही वहां उनके साथ रहती हैं। अपनी नशे की लत के कारण मैं शारीरिक शोषण की शिकार भी हुई। इसी बीच मैंने वहीं के एक लड़के से ऐसे ही विवाह भी कर लिया जो मुझे उन अस्लील लड़को से दूर रखने में मेरी मदद करता था, लेकिन व्हाइटनर का नशा करते करते मैं इतनी बिमार हो गई हूं कि मेरे पर्सनल पार्ट्स से गंदा पानी बहुत आता है। सब कहते हैं मुझे पीलिया की बिमारी ने पकड़ लिया। मैं खाना बहुत कम खाती हूं, खाना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। खाना देखकर उल्टी करने का मन करता है। बस नशा करती रहती हूं। मैं नशा छोड़ना चाहती हूं। अपनी जिंदगी अच्छे से जीना चाहती हूं, लेकिन अब तो मेरे माता पिता भी मुझे अपने साथ नहीं रखेंगे। मैं ऐसी जगह से निकलना चाहती हूं किसी होम मैं जाना चाहती हूं, जिसमें मेरी बीमारी भी ठीक हो जाए और मेरा नशा भी छूट जाए।

संपादकीय

प्रिय दोस्तों,

हम सभी पाठकों को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने बालकनामा अखबार को इतना प्यार दिया और इतना सराहा। यही वजह है कि बालकनामा अखबार दिन प्रतिदिन इतनी प्रसिद्धि हासिल कर रहा है। हमें बहुत गर्व महसूस हो रहा है कि हम 12 अप्रैल को इंटरनेशनल स्ट्रीट चिल्ड्रन डे के अवसर पर अपना यह विशेष अंक प्रकाशित कर रहे हैं।

आप सभी को यह जानकर भी हार्दिक प्रसन्नता होगी कि बालकनामा टीम को कंसोर्टियम फॉर स्ट्रीट चिल्ड्रन और प्लान इंडिया द्वारा आयोजित की गई परिचर्चा में भाग लेने का अवसर मिला।

हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चों के जीवन से जुड़ी वास्तविक घटनाओं को आपके बीच लेकर आ रहे हैं और बच्चों के बहादुरी के कारनामें भी लेकर आए हैं, ताकि आप उनका हौसला बढ़ाएं।

हम आपके बहुत आभारी होंगे यदि आप बालकनामा को किसी भी प्रकार से (छोटा या बड़ा या वित्तीय) सहयोग करें। आप नीचे दिए गए पते और balaknamaeditor@gmail.com इस मेल आई डी पर हमसे संपर्क कर सकते हैं।

बिहार से दिल्ली आया पढ़ाई करने और रिश्तेदारों ने लगवाया कबाड़े बीनने के काम पर

रिपोर्टर चांदनी

14 वर्षीय अमजत ने बताया कि वह पहले अपने माता पिता के साथ गांव में रहता था। वह स्कूल में पढ़ाई भी करता था। उसे पढ़ने का बहुत शौक था, लेकिन उसके पिता जी उसे बिना वजह बहुत मारते थे, क्योंकि वह अमजत के सौतेले पिता थे। अमजत की माता भी कुछ नहीं कहती थी, इसलिए अमजत अपनी नानी के घर चला गया। इस वजह से उसकी पढ़ाई भी छूट गई। अमजत की नानी के कुछ बिहार के रिश्तेदार दिल्ली आ रहे थे। उन्होंने अमजत से कहा कि दिल्ली में सेंटर होम है हम तुम्हारा दाखिला वहां करवा देंगे, जहां तुम बहुत अचछी पढ़ाई कर सकोगे। यह बात सुनकर मैं बहुत खुश हो गया। मेरी नानी ने कहा कि यह तो बहुत अच्छी बात है कि हमारे बेटे की वहां अच्छी पढ़ाई हो जाएगी। इस वजह से मैं उनके साथ दिल्ली आ गया और जब वह लोग मेरा दाखिला करवाने के लिए मुझे अपने साथ लेकर गए तो उन्होंने मुझसे कहा कि मेरा दाखिला नहीं हो पाया, क्योंकि मेरी उम्र 12 वर्ष है।

यह बात बताकर उन्होंने मुझे कूड़े के काम पर लगवा दिया। इस तरह मैं कबाड़ा बीनने का काम करने लगा और फिर मुझे अपना पेट भी भरना था तो कुछ न कुछ काम तो करना पड़ता। मैं अपने घर वापस भी नहीं जा सकता था, क्योंकि वहां मेरे पापा मुझे जीने नहीं देते। मैं मार्किट में सुबह से लेकर रात तक कबाड़ा बीनने का काम करता हूं। अमजत ने बताया कि वह अपने

दोस्तों के साथ काले खां में रहता है और उनके साथ ही कूड़ा उठाने का काम करता है। अब यहां मुझे अच्छा लगता है। मैं यहां अपने दोस्तों के साथ रहता हूं पर अभी भी मैं पढ़ना चाहता हूं और सेंटर होम जाना चाहता हूं, क्योंकि यहां मुझे बहुत परेशानी होती है। अमजत के दोस्तों ने बताया कि उसकी नानी के रिश्तेदार कूडे के काम पर ही लगवाने आए थे और अब वह उसको कहीं नहीं जाने देंगे। यह बात सुनने के बाद रिपोर्टर ने अमजद से पूछा कि तुम क्या चाहते हो तो अमजद ने कहा मैं पढ़ने की वजह से यहां आया था और मैं पढ़ना चाहता हूं। सेंटर होम जाना चाहता हूं।

सरकारी स्कूलों में बुरे बर्ताव के चलते शिक्षा से दूर होते बच्चे

रिपोर्टर चांदनी

यह एक बहुत बड़ी सच्चाई है कि बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ना नहीं चाहते। वह घर में रहकर कोई काम कर सकते हैं, लेकिन सरकारी स्कूल जाना पसंद नहीं करते। इसके पीछे आखिर क्या कारण है और बच्चे सरकारी स्कूलों में क्यों पढ़ना नहीं चाहते.. इस बात की जांच पड़ताल बालकनामा की रिपोर्टर चांदनी ने की। चांदनी जब अंकित और उसकी बड़ी बहन रिंकी से मिली और उनसे बात की तो उन्होंने बताया कि हम दोनों स्कूल में पढ़ने जाते थे और हमें पढ़ने का बहुत शौक था। लेकिन हमने स्कूल जाना छोड़ दिया, क्योंकि वहां हमें अच्छी पढ़ाई नहीं दी जाती थी। इस कारण पढ़ने का मन भी नहीं करता था। इसी प्रकार दूसरे बच्चों ने भी बताया कि स्कूलों बच्चों के साथ अच्छा बरताव नहीं किया जाता है। उन्होंने बताया कि हमारी टीचर हमसे चाय के भगोने और गिलास मंजवाती थी और बहुत मारती भी थी इसलिए हम स्कूल नहीं जाते हैं।

स्कूल में बच्चों के साथ घट रही इन घटनाओं के बारे में उन्होंने जब चांदनी को बताया तो उसने कहा कि अगर आप के साथ

इस तरह का व्यवहार हो रहा था तो आपने शिकायत क्यों नहीं की ? तो बच्चों ने कहा कि हमें तो वैसे भी टीचर की मार खानी पड़ती थी, हम डर के मारे किसी से कुछ नहीं बताते थे। हमने इसलिए स्कूल जाना छोड़ दिया। चांदनी ने कहा कि अगर आप सरकारी स्कूल में पढ़ना नहीं चाहते तो क्या आप प्राईवेट स्कूल में पढ़ना चाहते हो। तो इतना सुनते ही अंकित ने कहा कि मैंने और मेरी बहन ने माता पिता से कहकर प्राईवेट स्कूल में दाखिला करवाया था। हम स्कूल भी जाने लगे थे, लेकिन कुछ महीनों बाद एक टीचर का मोबाईल फोन स्कूल में चोरी हो गया था और उसके दूसरे दिन मैं और मेरी बहन रिंकी स्कूल नहीं गए थे, क्योंकि मम्मी ने हमें नहाने के लिए रोक लिया था। जब टीचर को पता चला कि अंकित नहीं आया है तो टीचर ने बच्चों से अंकित के बारे में पूछताछ करनी शुरू कर दी। एक बच्चे ने अंकित का नाम लगा दिया, क्योंकि अंकित और उस बच्चे की आपस में बनती नहीं थी। जब तीसरे दिन मैं स्कूल आया तो टीचर ने मुझसे पूछताछ करनी शुरू कर दी और उससे कहा कि मेरा फोन कहां है मेरा फोन लाओ। इतना सुनते ही मैंने उनसे कहा कि मैम मैंने आपका फोन नहीं लिया है। यह सुनकर वह अंकित को धमकी देने लगी और कहा कि मैं तुम्हें पुलिस से पकड़वा दूंगी, मेरा फोन वापस कर दो। पर मैंने फोन लिया ही नहीं था, जो उन्हें वापस करता। अंकित ने बताया कि मैंने टीचर से बहुत कहा कि मैम आपका फोन मैंने चोरी नहीं किया है, फिर भी मैम नहीं मानी। उसके बाद जिस बच्चे ने टीचर से कहा था कि अंकित ने ही फोन चुराया है, उसने अंकित से लंच के समय कहा कि मैंने तुम पर झूठा इल्जाम लगाया था कि फोन तुमने चोरी किया है। उसके बाद अंकित टीचर के सामने बहुत रोया उनके सामने गिड़गिड़ाकर कहा कि मैम मैंने आपका फोन चोरी नहीं किया, लेकिन फिर भी मैम नहीं मानी और काफी दिनों तक वह अंकित को डराती धमकाती रहीं। यह बरताव जब अंकित के साथ रोज होने लगा तो उसने और उसकी बहन ने स्कूल जाना छोड़ दिया। इस कारण अब वे दोनों किसी भी स्कूल में पढ़ना नहीं जाते हैं। यह घटना होने के बाद और बच्चों ने भी पढ़ने की आस छोड़ रखी है। इस तरह वहां रहने वाले लगभग 25 बच्चे स्कूल नहीं जा रहे हैं और शिक्षा से दूर हो रहे हैं।

शिवा ने लगाई मदद की गुहार

कैसे करूं अपनी पढ़ाई पूरी

रिपोर्टर शम्भू

शिवा 11 वर्ष का है। उसकी सीधी आंख खराब है। शिवा के परविार में एक बहन और एक भाई है। वह अपनी माता के साथ बदरपुर बॉर्डर में रहता है। शिवा के पिता जी का दो साल पहले देहांत हो चुका है और उस दिन के बाद से ही शिवा के घर की स्थिति बहुत खराब हो गई। उसकी मम्मी घरों में साफ सफाई करने जाती हैं। यह काम करने के उन्हें सिर्फ 1500 रूपए महीना मिलता है। शिवा के दोनों भाई बहन सरकारी स्कूल में पढ़ने जाते हैं। उसकी बहन चैथी कक्षा में पढ़ती है और भाई तीसरी कक्षा में पढ़ाई करता है। शिवा की मम्मी इतने पैसों में घर का खर्चा नहीं चला पाती हैं, इसलिए शिवा बसों में पेन बेचने का काम करता है। वह रोज सुबह बदरपुर से हर बसों में चढ़कर पेन बेचता है, लेकिन शिवा भी अपने भाई बहनों की तरह पढ़ना लिखना चाहता है। पर वह चाहकर भी पढ़ नहीं पा रहा, क्योंकि उसकी घर की हालत ठीक नहीं है और उसके घर में कमाने वाला भी कोई नहीं है। अगर शिवा बसों में पेन बेचने नहीं जाएगा तो घर का खर्चा सिर्फ 1500 रुपए में चलाना बहुत मुश्किल हो जाएगा, इसलिए शिवा चाहकर भी पढ़ नहीं पा रहा है। शिवा का कहना है कि मेरे जैसे बहुत ऐसे बच्चे हैं जो इसी तरह काम करके अपने घर की मदद कर रहे हैं। मैं चाहता हूं कि सरकार हमारे जैसे बच्चों की मदद करे। अगर सरकार हम जैसे बच्चों की मदद करेगी तो हम बच्चों को कोई समस्या नहीं होगी। इस चिल्ड्रन डे पर आप हम बच्चों की बात जरूर सुनें।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

पिछले कुछ महीनों में बालकनामा और बढ़ते कदम को बहुत सारी प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की प्रशंसा और अपने सहयोगियों की सराहना मिली, जिसके चलते लोग बहुत सारे अवसरों को संगठन के सदस्यों के साथ मिलकर मनाने लगे। हमारा यह विश्वास है कि इससे सड़क व कामकाजी बच्चों के अंदर आत्मसम्मान की भावना को बल मिला है। कृपया आप हमें इसी प्रकार से सहयोग करते रहें।

पिछले साल बढ़ते कदम संगठन के 250 सदस्यों का सरकारी स्कूलों में एडमिशन कराया गया और वे मन लगाकर पढ़ाई कर रहे हैं। अब वे बचत कैसे करें, इसके एंबेसडर भी बन रहे हैं

बढ़ते कदम के सदस्यों ने निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन के जीआर-पी थाने के एस.एच.ओ. के साथ होली का त्योहार मनाया

बढ़ते कदम के 30 सदस्यों ने जयपुर का भ्रमण किया और उनका तहे दिल से स्वागत किया गया

बढ़ते कदम के सदस्य श्री संजीव शास्वती द्वारा आयोजित कला प्रर्दशनी का उद्घाटन करते हुए

संपादकीय मीटिंग में बातूनी रिपोर्टर अपनी खबर की जानकारी देते हुए

बालकनाम की प्रसिद्धि के बारे में पढ़ते हमारे पाठक

बालकनामा को 92.7 एफ.एम. में बिग हीरो के लिए आमंत्रित किया गया था

बालकनामा खबरों में... गर्वित क्षण

Balaknama reported in Voice of America Link - www.facebook.com/voiceofamerica/videos/10153633579013074/?fref=nf

Balaknama team was invited at 92.7 Big FM. The famous RJ Richa Anirudh will do live show in program kBigHeroesl

http://www.hindustantimes.com/videos/delhi/balaknama-delhi-s-street-children-inspire-change-with-newspaper/video-N8j0j7sNuAZ1TeZs3VxmvN.html

Street children are the unlikely team of heroes behind the worldl s most unique newspaper Balaknama http://social.yourstory.com/2016/04/balaknama/

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471